Office of The Sadr Majlis Ansarullah Bharat
دفتر صدر مجلس انصاراللہ بھارت

Ph. +91-01872-220186, Fax, +91-01872-224186, Mob, +91-9815494687, E-Mail: ansarullahbharat@gmail.com

सारांश खुत्बः जुम्अः सैय्यदना हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफ़तुल मसीहिल अलख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ दिनांक**01.09.2017** मस्जिद बैतुल फ़तूह,मॉर्डन लंदन

अल्लाह तआला की कृपा से जलसा अनेकों के दिलों को खोलता है अनेकों के सन्देहों एवं शंकाओं को दूर करता है, इस्लाम का वास्तविक चित्र लोगों के सामने आता है। अल्लाह तआला इन बरकतों को सदैव फैलाता चला जाए। जलसा सालाना जर्मनी, आयोजन 5 अगस्त 2017 को ईमान वर्धक तथा दिव्य वर्णन

तशह्हुद तअव्वुज़ तथा सूरः फ़ातिहः की तिलावत के पश्चात हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया-

अल्लाह तआला ने अपने फ़ज़्ल से एम टी ए के माध्यम से अहमदिय्या समाज को इस प्रकार एकत्र तथा अवगत कर दिया कि अब ख़लीफ़-ए-वक़्त के दौरों और जमाअती प्रोग्रामों तथा ख़बरों को सुनने के लिए लम्बी प्रतीक्षा नहीं करनी पड़ती बल्कि साथ ही साथ प्रत्येक समाचार पहुंच रहा होता है।

अतः पिछले दिनों जैसा कि सब जानते हैं कि जर्मनी का जलसा हुआ उसके बारे में भी लोगों ने मुझे लिखा और जहाँ भी मैं जाऊँ, वहाँ के बारे में विशेष सोच होती है लोगों की, विभिन्न प्रकार की भावनाएँ होती हैं तथा अल्लाह तआला का धन्यवाद इंसान करता है और गुणगान करता है कि अल्लाह तआला ने यह वरदान फ़रमाकर किस प्रकार हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की जमाअत को एक एकता बना दिया है और एक लड़ी में पिरोए जाने के दृश्य का सुन्दर सामान कर दिया है। अतः इसके लिए हमें जहाँ अल्लाह तआला का शुक्र अदा करना चाहिए वहाँ एम टी ए के कार्यकर्ताओं का भी आभारी होना चाहिए। अल्लाह तआला इन सभी कारकुनों को प्रतिफल प्रदान करे।

फ़रमाया- इसी प्रकार विभिन्न विभागों में काम करने वाले कारकुन हैं जो जलसे पर स्वयं सेवा भाव से सेवा कर रहे होते हैं तथा मेहमानों में सेवा में उन्होंने दिन रात एक किया होता है। ये भी अब हज़ारों की संख्या में हो गए हैं, जिनमें पुरुष भी हैं तथा महिलाएँ भी हैं, युवा लड़के और युवतियाँ भी हैं तथा बच्चे और बच्चियाँ भी हैं, एक ऐसी भावना के साथ काम कर रहे होते हैं जो केवल इस ज़माने में अहमदिया जमाअत में नज़र आती है। अतः समस्त शामिल होने वालों को इन स्वयं सेवकों का आभारी होना चाहिए।

हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया- इसी प्रकार जलसे में शामिल होने वाले भी एक अच्छा प्रभाव अपने व्यवहार से मेहमानों पर छोड़ रहे होते हैं जिसकी अभिव्यक्ति मेहमान बाद में करते हैं। इस समय मैं इस संदर्भ में भिन्न भिन्न देशों से आए हुए मेहमानों की अभिव्यक्तियाँ पेश करुँगा ताकि जलसे की बरकतों का यह भाग भी हमारे सामने आ जाए तथा अल्लाह तआला के और अधिक आभार का अवसर मिले तथा अपनी हालतों को और अधिक सुन्दर बनाने की ओर हमारा ध्यान हो।

एक अरबी नस्ल के मुसलमान दोस्त ख़ालिद मियाद साहब जो रैड क्रास संगठन के साथ कार्यरत हैं, वे इस वर्ष जर्मनी जलसे में शामिल हुए। वे अपनी भावनाएँ अभिव्यक्त करते हुए कहते हैं कि मैं जब अपने ग़ैर मुस्लिम

दोस्तों को इस्लाम पर आपत्तियाँ करते हुए सुनता था तो मुसलमानों की आपसी घृणा एवं झगड़ों के कारण मैं इस्लाम का बचाव नहीं कर पाता था। आज इस जलसे में आपकी जमाअत के सामूहिक तथा एकाकी अमन, प्यार तथा मुहब्बत एवं आपसी सहयोग को देखकर और आपके लोगों में ख़लीफ़ः के लिए मुहब्बत और आज्ञापालन का दृश्य देखकर मेरा सिर गर्व से ऊँचा हो गया है कि मैंने एक ऐसी जमाअत को अपनी आँखों से देख लिया है जिसके लोग शांतिप्रिय हैं जिनका इज्तिमा सुसंगठित है। कहते हैं कि अब मैं आपका उदाहरण देकर बड़े विश्वास पूर्वक अपने ग़ैर मुस्लिम दोस्तों को पेश करके उनके इस्लाम पर आरोपों का बचाव कर सकता हूँ।

एक जर्मन दोस्त मिशाईल फ़ीचर साहब जलसे में शामिल हुए, कहते हैं कि मैं इस जलसे में शामिल होने से पहले अख़बार में पढ़ता रहता था कि अहमदी शांतिप्रिय लोग हैं परन्तु मेरे दिल में आता था कि अमन का दावा तो और भी अनेक लोग करते हैं। अब यहाँ आकर मैंने अपनी आँखों से देख लिया है, इतना बड़ा समारोह और इतना शांत है कि देख कर विश्वास नहीं होता, अन्था कहीं पाँच सौ आदमी भी एकत्र हों तो लड़ाई हो जाती है। कहते हैं कि जलसे में शामिल होकर तथा आपके इस शांत वातावरण को देखकर आपके अमन के दावे का सत्यापन करता हूँ।

एक महिला मारिया जोडे साहिबा जिनका सम्बंध दक्षिणी अमरीका से है, कहती हैं- यहाँ आकर मैं बड़ी हैरान हुई कि इतनी क़ौमों, नस्लों तथा रंगों के लोग ऐसी एकता के साथ रह रहे हैं तथा हर ओर अमन और शांति का वातावरण है। सब लोग संतुष्ट हैं, किसी को भी कोई भय नहीं। मेरे लिए ऐसे शांत समारोह में शामिल होना एक नया अनुभव है और मेरी इच्छा है कि मैं बर्लिन वापस जाकर अहमदिया जमाअत की मस्जिद से सम्पर्क करूँ तथा इस जमाअत के साथ और अधिक सम्बंधों को सुदृढ़ करूँ। मुझे आपके लोगों के साथ सम्मिलित होकर एक हार्दिक संतुष्टि प्राप्त हुई।

मैसी डोनिया की एक सोशल वैल्फ़ैयर तंज़ीम में काम करने वाली तीन महिलाएँ आई हुई थीं। एक कहती हैं कि हमने आपके लोग, आपकी शिक्षाएँ तथा आपकी लीडर शिप को देखा, और हम इस आभास के साथ वापस जाएँगी कि वहां के मुसलमानों को आपकी जमाअत का परिचय करा सकें। यह जमाअत और इसके जलसे अन्य मुसलमानों के लिए नमूना हैं तथा ऐसी शांतिप्रिय शिक्षा तथा ऐसी सुसंगठित जमाअत इस योग्य है कि अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर मुसलमानों का प्रतिनिधित्व करे।

लीटोया से आई हुई एक महिला पत्रकार आगस्टन साहिबा ने लिखा कि मैं गत छः महीनों से इस्लाम के विभिन्न समुदायों पर, एक प्रोजैक्ट पर काम कर रही हूँ इस सम्बंध में मैं इस्तम्बोल भी गई तथा वहाँ विभिन्न इस्लामी सम्प्रदायों से मिली हूँ। परन्तु यहाँ जमाअत अहमदिया के इमाम को देखकर मेरे दिल का जो हाल हुआ है उसको बयान करने के लिए मेरे पास शब्द नहीं हैं।

लीटोया से क़र्तबा यूनीवर्सिटी की प्रौफ़ेसर लोली डियास साहिबा ने जलसे में शामिल होकर अपने अनुभव बयान करते हुए लिखा कि मैं जीवन में पहली बार मुलमानों के इतने बड़े जलसे में शामिल हुई हूँ। मैंने जमाअत अहमदिया के इमाम को पहली बार जब निकट से देखा मेरे लिए अनोखा अनुभव था, इसका आभास मुझे जीवन भर याद रहेगा।

हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया- इस साल बोसनिया से छियालीस प्रतिनिधियों का गुरुप जलसे में शामिल हुआ, इनमें अठारह अहमदी थे तथा शेष लगभग अठाईस ज़ेर-ए-तबलीग़ थे। एक मेहमान यासमीन साहिबा कहती हैं कि जलसे के इतने बड़े प्रबन्ध को देखकर मुझे आश्चर्य हुआ कि किस प्रकार के लोग हैं। जलसे की समस्त व्यवस्था में मुझे कोई त्रूटि दिखाई नहीं दी।

एक मेहमान निजात साहिबा बोसनिया की रोमन कम्यूनिटी के विख्यात राजनीतिज्ञ हैं बुद्धिजीवी के रूप में जाने जाते हैं तथा टोतला नगर के काउंसलर भी हैं, कहते हैं- जलसे के समस्त प्रबन्ध बड़े सुन्दर ढंग से किए गए। मैंने इससे पहले कभी इस प्रकार के प्रोग्राम में शिरकत नहीं की थी। यह जलसा मेरे लिए विभिन्न दृष्टि से लाभप्रद था। कारकुनों की श्रद्धा देखकर मैं यही समझा कि ये लोग ईमान में बड़े मज़बूत हैं तथा इनकी कथनी करनी में समानता ही इनकी प्रगति का राज़ है तथा इन लोगों में यह स्थिति पैदा होने का कारण इनका ख़िलाफ़त के साथ सम्बंध है।

एक ग़ैर अज़-जमाअत दोस्त माहिर साहब अपनी पत्नि के साथ अपने व्यक्तिगत ख़र्च पर जलसे में शामिल हुए, कहते हैं कि यहाँ मेहमानों का जिस प्रकार ध्यान रखा जाता है तथा जितने प्रेम से लोग व्यवहार करते हैं, मैं सत्य कहता हूँ कि यदि ये लोग हमें धरती पर सोने के लिए कहें तथा खाने में केवल सूखी रोटी ही क्यूँ न दें हमें इनसे कोई शिकायत नहीं होगी क्यूँकि जो प्यार और मुहब्बत यहाँ हमें मिला है इसका दुनिया में कोई उदाहरण नहीं।

एक मेहमान अमीर साहब जो पहली बार जलसे में शामिल हुए जलसे के वातावरण ने उनपर बड़ा सकारात्मक प्रभाव किया, कहते हैं कि मैं अपने दिल की स्थिति को बयान नहीं कर सकता, इन बातों को केवल अनुभव किया जा सकता है इस लिए प्रत्येक को चाहिए कि इस जन्नत वाले समाज में कुछ दिन व्यतीत करे ताकि उसको वास्तविक जन्नत के विषय में एक विश्वास पैदा हो जाए।

हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया- इस साल बुलग़ारिया से भी 52 लोगों पर आधारित एक गुरुप ने जलसे में शिरकत की। इनमें से बीस लोग अहमदी थे, बत्तीस ग़ैर अहमदी मेहमान थे। इस गुरुप में व्यापारी भी थे, वकील भी थे, लैक्चरर भी थे, विद्यार्थी भी थे तथा साधारण वर्ग से सम्बंध रखने वाले लोग भी शामिल थे। एक महिला ऐसी नोवास कहती हैं- इंसान यदि अपना जीवन बदलना चाहे तो जलसे पर आए। मैंने यहाँ से बहुत कुछ सीखा है, दो बातों का वर्णन अवश्य करना चाहती हूँ। एक तो यहाँ अल्लाह से मुहब्बत करना सिखाई जाती है दूसरे लोगों में एक दूसरे से मुहब्बत और सम्मान सिखाया जाता है।

बुलग़ारिया गुरुप के एक मेहमान फ़फ़को अनल साहब कहते हैं कि केवल अहमदी ही ऐसे लोग हैं जो वास्तव में अमन सिखाते हैं, आदर करते हैं तथा दुनिया को जन्नत बनाना चाहते हैं। यहाँ वास्तव में जीवन का नूर मिलता है ऐसा प्रकाश जो इंसान को जीवन प्रदान करता है। मैं तो अब पूरे जीवन सारे लोगों को बताऊँगा कि वास्तविक इस्लाम, अहमदियत ही है जो दुनिया में शांति का प्रयास कर रही है।

एक ईसाई महिला कहती हैं- यह जलसा तो एक चमत्कार है। कहती हैं कि मुझे जुम्अः के ख़ुत्बः ने बड़ा प्रभावित किया। इंसान से प्रेम, दोष को छिपाना, एक दूसरे की सहायता करना, किसी के दोष को दूसरे के सामने प्रकट न करना बल्कि उसके लिए दुआ करना, ये शिक्षाएँ जो ख़लीफ़ः ने बयान फ़रमाई हैं, काश, आज सारी दुनिया आपकी इस आवाज़ को सुने, यदि दुनिया सीधे रास्ते की ओर आना चाहती है तो उसे इन आवाज़ों को सुनना होगा तथा आपकी शिक्षाओं को मानना होगा।

हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया- मैसी डोनिया से 65 लोगों का गुरुप जलसे में शामिल हुआ उनमें से चार विभिन्न टेलीवीज़नों के पाँच प्रतिनिधि भी थे। तीन विभिन्न क्षेत्रीय भाषाओं के प्रतिनिधि थे, एक नैशनल टेलीवीज़न के प्रतिनिधि थे। पत्रकारों ने जलसा सालाना के दौरान रिकार्डिगं भी की, विभिन्न लोगों से साक्षात्कार भी करते रहे तथा 28 तारीख़ को मेरे से मुलाक़ात भी थी इनकी।

कहते हैं- यह रिकार्डिगं जो हमने की है इसकी डाक्यूमैन्टरी दिखाएँगे। इनमें 32 ईसाई दोस्त थे, 23 अहमदी तथा 10 ग़ैर अहमदी दोस्त थे। इनमें से एक ने अन्तिम दिन बैअत भी कर ली थी।

मैसी डोनिया से आई हुई एक मेहमान महिला कहती हैं कि ख़लीफ़ः की तक़रीरों ने मुझ पर भारी प्रभाव छोड़ा है। मुझे उस तक़रीर से पता चला है कि इस्लाम का वास्तविक अर्थ शांति है न कि जंग। यदि हम इस शिक्षानुसार काम करें तो दुनिया जंग हीन अमन और शांति का गहवारा बन जाए। कहती हैं कि जो आपने महिलाओं के अधिकारों पर बात की, यह बड़ी अच्छी शिक्षा है। कहती हैं कि बैअत ने भी मुझ पर बड़ा गहरा प्रभाव छोड़ा है ऐसा लग रहा था जैसे समय थम गया है।

मैसी डोनिया से आने वाली एक मेहमान महिला कहती हैं, यह टी वी की रिपोर्टर हैं, कि जलसे ने मुझ पर इस्लाम की नई दिशाओं की ओर मार्ग दर्शन किया है कभी ऐसा समय भी था कि जैसे इस्लाम शब्द मेरे लिए निषेध था अब मुझे इस्लाम का नया परिचय प्राप्त हुआ है। मैं रिपोर्टर के रूप में यह नया अनुभव प्राप्त करने पर आपकी आभारी हूँ। हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया- इनकी मेरे साथ मुलाक़ात भी थी। ये कहती हैं कि अहमदिया जमाअत के

इमाम के समस्त उत्तरों से मैं संतुष्ट थी तथा आपने मेरा नई दिशाओं की ओर मार्ग दर्शन फ़रमाया, नए आकाश की ओर मार्ग दर्शन फ़रमाया है और अब मैंने इस्लाम का वास्तविक चित्र देखा है।

हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने भिन्न भिन्न देशों से आने वाले मेहमानों की ईमान वर्धक अभिव्यक्तियाँ बयान फ़रमाईं और फ़रमाया- जर्मनी में पिछले दो तीन साल से बैअत का समागम भी हो रहा है। इस जलसे के अवसर पर गयारह देशों से सम्बंध रखने वाले तेंतीस लोगों ने बैअत करने की तौफ़ीक़ पाई। इनमें अलबानिया, गैम्बिया, घाना, जर्मनी, ईराक़, यमन, मराकिश, फ़लस्तीन, सीरिया, तुर्की तथा लिथवेनिया से आने वाले लोग थे।

हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया- ये जलसे के विषय में कुछ प्रतिक्रियाएँ थीं जो मैंने पेश कीं। अल्लाह के फ़ज़्ल से जलसा बहुत सों के सीने खोलता है, बहुत सों के सन्देहों को दूर करता है, इस्लाम का वास्तविक चित्र उनके सामने आता है, अल्लाह तआला इन बरकतों को सदैव फैलाता चला जाए।

मीडिया क्वरैज के अनुसार जलसे के पहले दिन जुम्अः के बाद एक मेरे साथ प्रैस कान्फ्रंस भी थी जिसमें नैशनल और इन्टर नैशनल मीडिया शामिल था। इन्टर नैशनल मीडिया में इटली, मैसी डोनिया, आस्ट्रेलिया, ब्राज़ील तथा बैल्जियम के टी वी और समाचार पत्रों के प्रतिनिधि थे। नैशनल स्तर पर जर्मनी के चार टी वी स्टेशन और तीन प्रिन्ट मीडिया के प्रतिनिधि मौजूद थे। स्थानीय स्तर पर एन टी वी, एक रेडियो तथा चार प्रिन्ट मीडिया के प्रतिनिधि थे।

सामूहिक रूप से जर्मनी में जलसा सालाना तीन दिनों की क्वरैज हुई। रिपोर्ट के अनुसार पाँच टी वी चैनल्ज़, तीन रेडियो चैनल्ज़ तथा इकसठ समाचार पत्रों तथा अन्य प्रिन्ट मीडिया के माध्यम से पाँच करोड़ बानवे लाख से ऊपर लोगों तक पैग़ाम पहुंचा। इसके अतिरिक्त इन्टर नैशनल मीडिया में अगले सप्ताह तक जो क्वरैज होने की आशा है तथा उनके प्रतिनिधियों ने बताया था और उनकी जो viewership है उसके अनुसार चार करोड़ तेरह लाख से ऊपर लोगों तक सन्देश पहुंचेगा। इसी प्रकार alislam वैब साईट पर जलसे का प्रसारण एम टी ए जर्मन स्टूडियो के सहयोग से अपलोड की जाती रही। सैन्टर प्रैस और मीडिया आफ़िस की ओर से जारी की हुई प्रैस रिलीज़ भी अपलोड की गई। सोशल मीडिया पर भी जलसे की क्वरैज के संदर्भ में कार्यवाही की गई जिसमें फ़ेस बुक पर छत्तीस पोस्ट प्रसारित की गईं जो चार लाख बीस हज़ार लोगों ने देखीं तथा छत्तीस हज़ार लोगों ने पोस्ट को पसन्द किया तथा इस पर अपनी टिप्पिणयाँ भी कीं। इसी प्रकार ट्वीटर पर भी जलसे के संदर्भ में पाँच लाख छत्तीस हज़ार लोगों ने जलसे के टवीट देखे तथा पाँच हज़ार आठ सौ लोगों ने रिटवीट किया।

ख़ुत्बः के अन्त में हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया- इस दौरे के दौरान अल्लाह के फ़ज़्ल से एक मस्जिद के उदघाटन की भी तौफ़ीक़ मिली, इसका भी बड़ा अच्छा प्रभाव मेहमानों पर हुआ तथा उन्होंने उसी समय इस बात की अभिव्यक्ति की, कि यह इस्लाम तो जर्मनी में फैलना चाहिए। इस समारोह की भी अच्छी क्वरैज हुई, दो टी वी चैनल और दो समाचार पत्रों के प्रतिनिधि आए हुए थे जिनके माध्यम से साठे सोलह लाख लोगों तक इस्लाम का पैग़ाम पहुंचा। अल्लाह तआला जर्मनी जमाअत को सामर्थ्य प्रदान करे कि वह भविष्य में इससे बढ़कर इस्लाम का पैग़ाम पहुंचाने वाले हों तथा जो परिचय अब हुआ है उसमें और अधिक विस्तार पैदा करें।

TOLL FREE NO: 180030102131